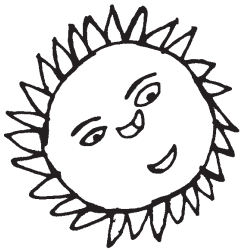

# हलचल

बाल पत्रिका

अंक–3, नंवबर–दिसंबर, 2009

## हमारे काम के बारे में.....

एक पत्थर की भी तकदीर बदल सकती है
शर्त ये है कि सलीके से संवारा जाये।

किसी शायर की लिखी हुई ये लाईनें जीवोदय जैसे समूह पर सटीक बैठती हैं। वे बच्चे जिनको समाज ने पहले ही नकार दिया हो उनको संवारना एवं उनके बेहतर जीवन के लिये प्रयास करना जीवोदय के काम का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। जीवोदय उन बच्चों के लिये काम करता है जो विभिन्न कारणों से भागकर अपना जीवन जी रहे हैं और रेलवे प्लेटफॉर्म ही इनका घर है। यहां रहकर वे अपना जीवन यापन करते हैं।

संस्था की शुरुआत सन् 1999 में इटारसी के रेलवे प्लेटफॉर्म से हुई थी। आज ये संस्था मध्यप्रदेश के दो शहरों इटारसी एवं जबलपुर में कार्यरत् है। जब इस काम की शुरुआत हुई तो संस्था के साथियों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। उसका कारण शायद ये हो सकता है कि हमारे समाज में ऐसे बच्चों के विकास के लिये काम करने की ये एक नयी अवधारणा थी। समुदाय के लोगों को इसके प्रति संवेदनशील बनाने में एवं इस तरह के बच्चों के मनोविज्ञान की समझ बनाने में संस्था के साथियों को कुछ समय लगाना पड़ा। लेकिन आज स्थिति बिलकुल अलग है। आज लोग इस काम को काफी सकारात्मक नजरिये से देखते हैं।

जीवोदय के साथी मानते हैं कि जो बच्चे बहुत अव्यवस्थित जिंदगी जी रहे हैं उन्हें भी बेहतर जिंदगी मिलनी चाहिये। यही सोचकर कुछ साथियों ने संस्था की बुनियाद रखी। आज ये बुनियाद मजबूत भवन के रुप में हम सबके सामने है।

संस्था ने मुख्यतः चार तरह के काम अपने हाथ में लिये हैं। जो इस प्रकार हैं-

**समयोग :**

जीवोदय की ये एक ऐसी परियोजना है जिसमें हर दिन लगभग 35 बच्चे आते हैं। यहां बच्चों को रहने की व्यवस्था होती है। ये परियोजना संस्था के इटारसी केन्द्र में है।

# हलचल

बाल पत्रिका
अंक-3 नवंबर-दिसंबर,09

## इस अंक में.....


| | |
|---|---|
| चिट्ठी | 2 |
| स्टेशन के अंदर | 3 |
| दीवाली की मस्ती | 4 |
| होम करते हाथ जले | 7 |
| आओं चित्र बनायें | 8 |
| क्या हमें पहचानते हो | ९ |
| जान बची तो | 10 |
| क्या जमाना आ गया है | 12 |
| मुझे कुछ कहना है | 13 |
| पिछले दिनों में | 16 |
| क्या ये सच है | 18 |

*चित्र : अंजली (10 साल)*

**संपादन एवं डिजायन :** ज्योति दीवान
**संपादक मंडल :** रानी सराठे, राहुल बदोनिया, विक्रम चौरे, मेघा खुजूर
**मुख्यपृष्ठ :** बिटटू कुमार महतो (14 साल) और ज्योति (10 साल)
**प्रकाशक :** जीवोदय, इटारसी
**मुद्रक :** शांति प्रेस, होशंगाबाद

इटारसी
नवंबर-दिसंबर, 2009

प्रिय दोस्तों,

नमस्ते,

अरे भाई सब ठीक है न? सुना है तुममें से कुछ बच्चों ने हाथ में ही पटाखे फोड़ लिये। देखो भईया, लापरवाही की है तो सजा तो भुगतनी ही पड़ेगी। सभी पटाखे फिस्सी थोड़े ही निकलते हैं। कुछ पटाखे बहुत आवाज करने वाले और खतरनाक भी तो होते हैं। अरे सुनो-सुनो, इस बार क्रिसमस पर सेंटाक्लॉज अंकल ने तुम्हें क्या गिफ्ट दिया है, ये भी नहीं बताओगे क्या? नहीं बताना है तो मत बताओ, पर मुंह तो मत छिपाओ।

काश! रोज ही त्योहार होते तो मजे ही मजे होते। भला, मौज-मस्ती करना किसे अच्छा नहीं लगता। कभी-कभी लगता है कि पता नहीं, ये इतना बोरियत भरा केलेंडर किसने बना दिया। जरूर किसी स्कूल के प्रिंसिपल ने बनाया होगा जो चाहते हैं कि हम हर समय चुपचाप पढ़ते ही रहें।

पर मेरे भाई, दुनिया में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें त्योहारों की ये खुशियॉ मनाने के अवसर ही नहीं मिल पाते। ऐसे भी बच्चे हैं जो कचरे के डिब्बे में से कुछ खाने की चीजें निकालते हैं और उनको साफ करके खाते हैं। ऐसे मौकों पर हम मिठाई खा-खाकर ऊब जाते हैं। कई बार यह भी देखा है कि कुछ बच्चों का झुंड गलियों से गुजरते हुए बिना फूटे पटाखों को बीनता है और उनमें अपनी खुशियॉ ढूंढते नजर आता है। कभी तुम्हारे मन में भी ये सब देखकर सवाल आता होगा कि ऐसा क्यों है?

खैर, कहने और विचार करने को तो बहुत कुछ है पर हमें अभी न्यू-इयर भी मनाना है। और हां, न्यू-इयर पर मिठाई अकेले-अकेले नहीं खाना है।

उम्मीद है इस बार का अंक तुम्हें अच्छा लगेगा। और इसको बेहतर बनाने के बारे में तुम अपने सुझाव और अपनी बातें हलचल को जरूर ही भेजोगे। इसी उम्मीद के साथ-

**आपकी दोस्त**

**हलचल**

# स्टेशन के अंदर

स्टेशन के अंदर मजा आता है।

जब लट्ठ पड़ते हैं तो भागता नजर आता है।

न जाने क्यूं अंदर जाता हूं

बॉटल लगाते-लगाते

जेल पहुंच जाता हूं।

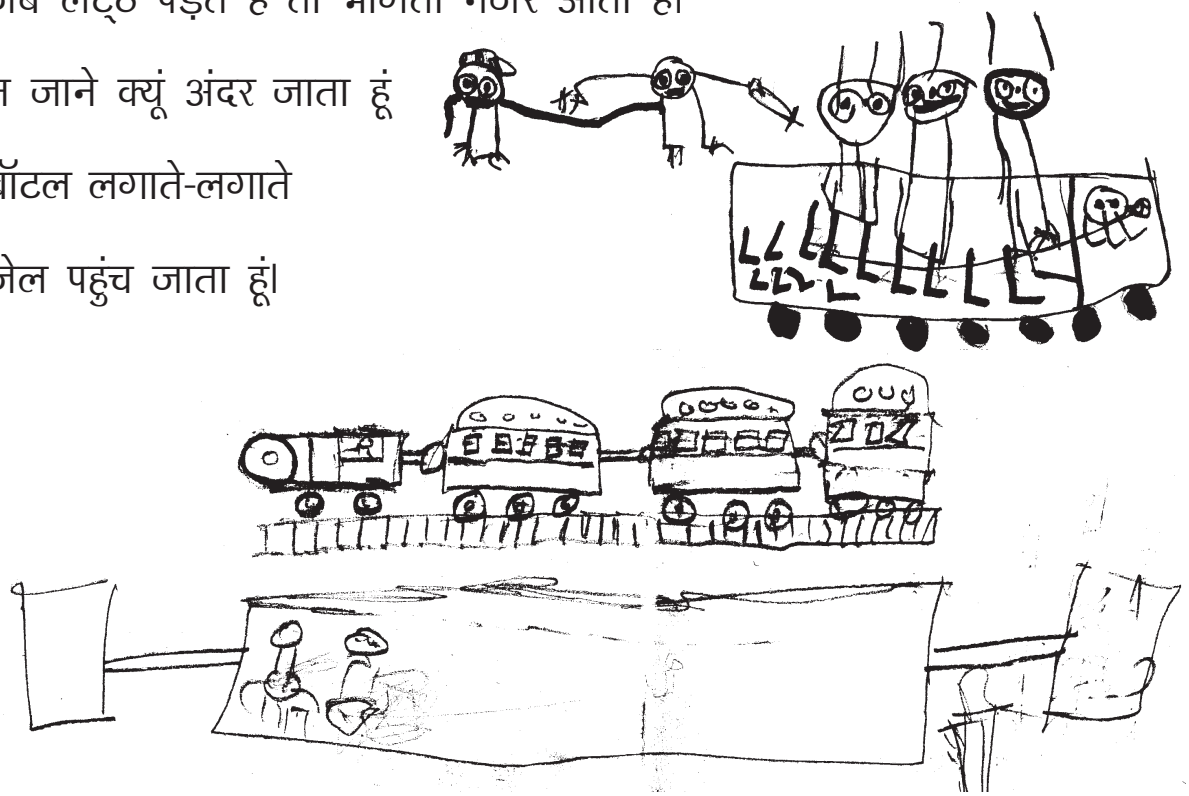

*कविता : महेश मुखिया, उम्र–पन्द्रह साल* ***(जीवोदय–इटारसी)***

***चित्र : राजकुमार (उम्र–12 साल)***

***(यहाँ चौथी लाइन का अर्थ रेलगाड़ी में पानी की बॉटल बेंचने से है। )***

# दीवाली की मस्ती

प्रार्थना में
हम सभी ने दीवाली के
बारे में कुछ-कुछ बातें
कहीं। और फिर सबने
एक-दूसरे को हैप्पी
दीवाली कहा।

*पूजा, कक्षा–छटवीं*
***(जीवोदय–इटारसी)***

हमें खूब सारे पटाखे मिले थे। हमने बाहर आकर पटाखे फोड़े।

*युनुस, कक्षा–तीन* ***(जीवोदय–इटारसी)***

इस दिन
हम सब घूमने गये
और मिठाई खाई। बहुत मजा
आया।

*बॉबी, कक्षा–दूसरी*
*([redacted]*

दीवा[redacted]
देखी। फिर[redacted]
की। इसके बा[redacted]ार
पटाखे मिले थे। सब[redacted] ग्रुप में
पटाखे फोड़े।

*अमन कुमार शर्मा*
*कक्षा–सात* ***(जीवोदय–इटारसी)***

उस दिन हमने 15–20 मिनिट तक कोलगे अंटी का इंतजार किया। कोलगे अंटी को हम सब दादी कहते हैं। उन्होने आकर हमें बहुत सारे गिफ्ट दिये।

*रजनीकांत, कक्षा–आठवीं*

***(जीवोदय–इटारसी)***

इस दिन सिस्टर ने हम सब बच्चों को पिक्चर दिखाई। पिक्चर में हमें बहुत मजा आया। शाम को हम सबने पटाखे फोड़े।

*ज्योति, कक्षा–तीसरी*

***(जीवोदय–इटारसी)***

इस दिन हम बहुत जल्दी उठ गए। सबने मिलकर गोबर इकट्ठा किया। फिर सबने बाहर की साफ-सफाई की और फिर गोबर से लीपा।

*शुभम, कक्षा–छटवीं* ***(जीवोदय–इटारसी)***

हमने सुबह उठकर रंगोली की तैयारी की, फिर हमने रंगोली बनायी। हमारे ग्रुप का तीसरा नंबर लगा था। हमारे ग्रुप को इनाम मिला। हम सब लोग बहुत खुश हुए।

*मनीषा, कक्षा–छटवीं* ***(जीवोदय–इटारसी)***

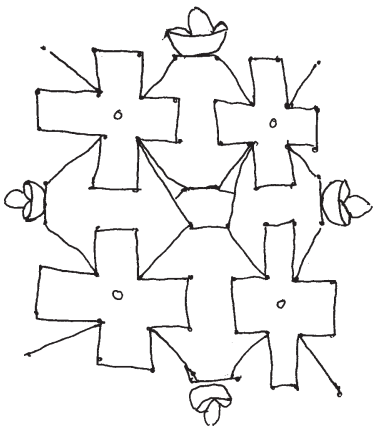

इस दिन एक बुरी बात हो गयी। हमारे एक दोस्त के हाथ में एक अनार फूट गया। सब लोग घबरा गये। लेकिन सिस्टर ने उसे तुरंत ही दवाई लगायी। थोड़ी ही देर में वो ठीक हो गया।

*गोलू, कक्षा–आठवीं* ***(जीवोदय–इटारसी)***

दीवाली पर हमने फिल्म देखी। शाम को सबने मिलकर प्रार्थना की और फिर सब घूमने गये।

*अंजली, कक्षा–तीसरी*

***(जीवोदय–इटारसी)***

## *हम आभारी हैं–*

**जीवोदय में बच्चों के साथ दीवाली की खुशियां बांटनें में हमें होशंगाबाद जिला कलेक्टर, इटारसी एस.डी.एम.,नीलम होटल, एवं शहर के बहुत सारे गणमान्य नागरिकों ने आर्थिक एवं अन्य सहयोग दिया। जीवोदय परिवार उन सभी का अभारी है।**

# होम करते हाथ जले

एक बार मैं अपने सहेलियों के साथ साइकिल चलाने गयी थी। साईकिल चलाते-चलाते हम बातें करने लगे। किसी का भी ध्यान सड़क पर नहीं

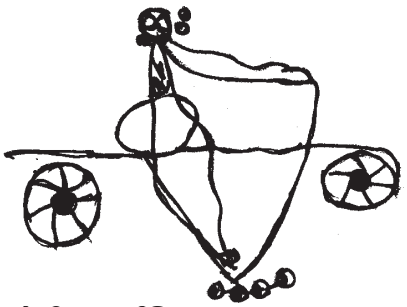

था। अचानक मेरी साईकिल सड़क पर चल रहे एक व्यक्ति से जा टकराई। वो गिर गया। मैंने जाकर उससे क्षमा मांगी। वो अच्छे स्वभाव का लगा, क्योंकि उसने मेरी गलती का बुरा नहीं माना। उसने मुझे माफ कर दिया और वो मुझसे गले भी मिला। मैं उसके इस व्यवहार से प्रभावित हो गयी।

इसके बाद वो अपने घर चला गया और मैं अपने घर आ गयी। जब घर आकर मैंने हाथ-मुंह धोकर आइने में देखा तो मैं हक्की-बक्की रह गयी। मेरे गले की चेन गायब थी। मुझे समझते देर न लगी कि उस आदमी ने गले मिलते हुए मेरे गले की चेन पर अपना हाथ साफ किया था।

इस घटना से मैं बहुत दुखी हुई। जिस तरह से उसने मुझे माफी दी थी उससे मुझे लगा था कि वो बहुत भला आदमी है। लेकिन वो मेरा भ्रम था।

*सपना, उम्र–11 साल* ***(जीवोदय–इटारसी)***

***चित्र : राजकुमार, उम्र–12 साल***
***(जीवोदय,इटारसी)***

# आओ चित्र बनायें

चित्र : धर्मेन्द्र, 11 साल (जबलपुर)

यहां पर एक चित्र छपा है, क्या तुम पहचान पा रहे हो कि ये चित्र किस चीज से बना है? सोचो, और साथ ही ये भी सोचो कि चित्रों को बनाने के और क्या-क्या तरीके हैं? और हां, उन तरीकों के बारे में हलचल पढ़ने वाले दोस्तों को जरूर बताना।

# क्या हमें पहचानते हो?

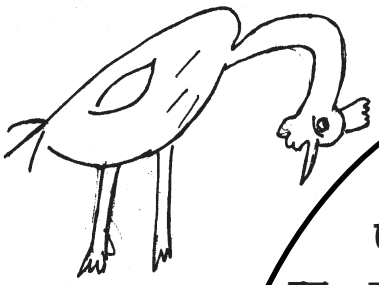

हम सबको तो तुम पहचानते ही होगे। लेकिन क्या तुम हमारी आदतों के बारे में भी जानते हो? तो चलों, हमको देखो और बताओ कि हम कहां रहते हैं, क्या खाते है, क्या हम समूह में रहते हैं या अकेले-अकेले? और हां, जब हम बोर होते हैं तब क्या करते हैं? सोचो-सोचो, जब तुम्हारा काम पूरा हो जाये तो लिखकर हलचल के लिये भेजना ताकि और दोस्त भी हमारे बारे में जान सकें।

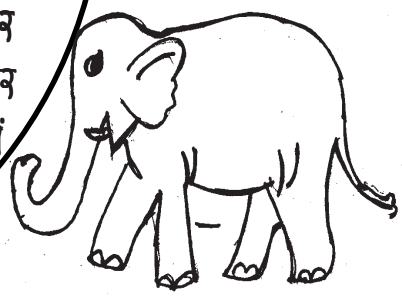

# जान बची तो ...

एक समय की बात है। एक बड़ा और हरा मेंढ़क गहरे गड्ढे में गिर गया। उसने बाहर निकलने की बहुत कोशिश की। मगर ऊपर नहीं आ सका। थोड़ी देर में उसने कोशिश करना छोड़ दिया और मदद के लिये पुकारने लगा।

पास ही एक खरगोश घास पर खेल रहा था। उसने चिल्लाने की आवाज सुनी और गड्ढे के पास जा पहुंचा। मेंढ़क ने टर्राते हुए कहा, ''मैं इस गड्ढे से बाहर नहीं आ सकता, क्योंकि मैं ज्यादा ऊंचा नहीं कूद सकता।'' खरगोश बोला, ''तुम एक मिनिट रुको, मुझे पता है कि सीढ़ी कहां है, मैं जाकर ले आता हूं। फिर तुम सीढ़ी के सहारे बाहर आ जाना।'' मेंढ़क टर्राते हुए बोला, ''ठीक है, मैं तुम्हारा इंतजार करूंगा।''

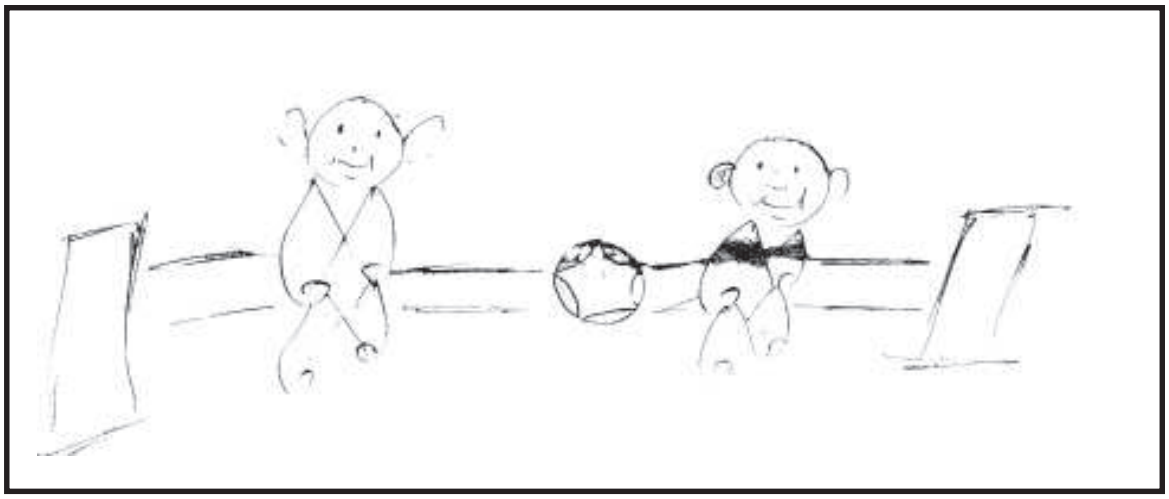

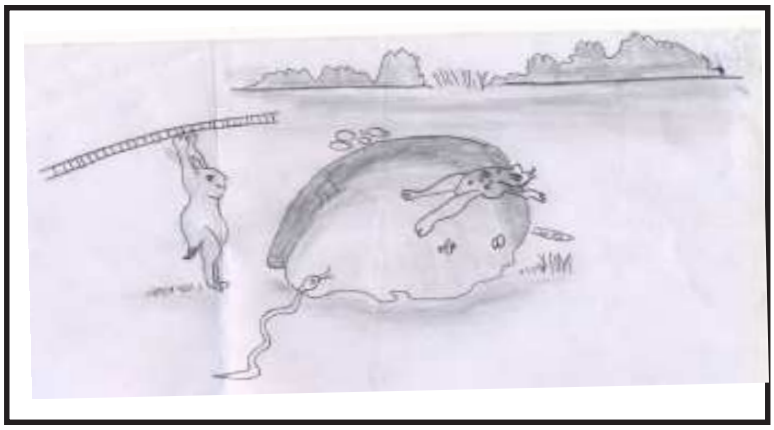

खरगोश सीढ़ी लाने के लिये दौड़ा। जब वह सीढ़ी लेकर लौटा तो मेंढ़क बाहर ही बैठा था। खरगोश उसे देखते ही बोला, ''अरे! तुम तो गड्ढे से बाहर भी आ गये। मैंने तो सोचा था कि तुम नहीं आ पाओगे।'' मेंढक ने खुश होते हुए कहा, ''मैं भी यही सोचता था। मगर एक सांप गड़ढे में आ गया। मुझे तो अपनी जान बचानी ही थी, इसलिए मैं बाहर आ गया।''

खरगोश ने अगले दिन अपने दोस्तों को ये घटना सुनाई। अंत में उसने कहा, ''तुम्हें नहीं पता कि तुम क्या कर सकते हो। लेकिन तुम तब तक नहीं करते जब तक कि तुम्हें करना न पड़ें।''

***कहानी और चित्र -दुर्गेश, उम्र-13 साल (जबलपुर)***

# क्या ज़माना आ गया

कैसे-कैसे दिन आ गए हैं कि अब पौधों को उगने की जगह नहीं मिल रही। यह तो मजाक था लेकिन सच तो यह है कि हाल ही में रूस के एक व्यक्ति आर्टयोम सिडोरकिन के साथ कुछ ऐसी ही घटना घटित हुई। उसकी उम्र 28 साल के लगभग थी। उसे अपने फेंफड़े में कुछ दिनों से असहनीय दर्द होने लगा। उसे कफ बनने लगा और खांसी के साथ मुंह से खून निकलने की शिकायत भी हुई। जांच के दौरान डॉक्टरों को फेंफड़ों में ट्यूमर होने के सबूत मिले। ये कैंसर के गुण से मिलते जुलते थे। लेकिन सर्जरी के दौरान डॉक्टरों ने जो देखा, उसे देखकर उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो पा रहा था। जो उन्हें कैंसर का ट्यूमर लग रहा था दरअसल वह 5 सेंटीमीटर लंबा एक पौधा था। अनुमान है कि उक्त व्यक्ति के फेंफड़ों में कभी जीवित बीज श्वांस द्वारा चला गया होगा जो वहां वायु और नमीं के कारण अंकुरित हो गया। यह घटना अप्रैल 2009 की है जो रूस के यूराल क्षेत्र में घटित हुई।

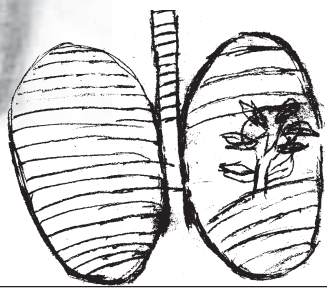

***साभार इंटरनेट***

# मुझे कुछ कहना है

मेरा नाम राजित है। मेरा जन्म दिल्ली के मंगोलपुरी क्षेत्र के पंजाबी केम्प में हुआ था। मेरा परिवार बहुत बड़ा है। मेरे चार बड़े और एक छोटा भाई है। और हां, मेरी एक बहन भी हैं जिसका नाम पिंकी है। मेरे पिताजी का नाम मोहनलाल गांधी है। वे बताते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में बहुत सी मुसीबतों का सामना किया है। उन्होंने बताया कि जब 1984 में दिल्ली में जब दंगे हुए थे तब वे भी उसका शिकार हुए थे। इस घटना में वे विकलांग हो गये। लेकिन उन्होंने बड़ी हिम्मत के साथ इसका सामना किया। आज मेरे पिताजी की दिल्ली में गुटका-तंबाकु की छोटी सी दुकान है जिससे हमारे परिवार का गुजारा होता है।

बचपन में मेरी मां मुझे और मेरे भाई-बहनों को पढ़ाना नही चाहती थी वो मुझे काली मंदिर ले जाती थी और वहां पर भीख मंगवाती थी। लेकिन मेरे पिताजी चाहते थे कि हम पढ़ें-लिखें और कुछ अच्छा काम करें जिससे देश का नाम रोशन हो। वे मेरी मां को समझाया करते थे कि तुम बच्चों से भीख मत मंगवाया करो। इसी बीच मेरा भाई नशे का आदी हो गया। पिताजी मां से कहते थे कि बच्चों को समझाये कि वे नशा न करें लेकिन मेरी इस बारे में कोई भी ध्यान नहीं देती थीं।

एक दिन मेरे पिताजी दुकान पर थे और मां घर में सो रही थी। उस समय घर पर मैं और मेरे भाई और बहन थे। मेरे बड़े भाई के कहा ,''चलो, हम कहीं घूमने चलते है।'' हम उनके साथ जाने के लिये तैयार हो गये। उसी समय मेरी बहन भी आ गयी वो भी हमारे साथ चलने की जिद करने लगी। मगर हमने उसको भगा दिया। ये घर में हमारा आखिरी दिन था। इसके बाद हमने वो घर और शहर भी छोड़ दिया। फिर हम एक रेलगाड़ी में बैठकर दूसरे शहर चले गये।

कुछ दिनों तक तो सब कुछ अच्छा था। अचानक एक दिन मेंरा बड़ा भाई हमें छोड़कर कहीं चला गया। हम दोनों भाई बहुत रोये क्योंकि उस समय मैं और मेरा छोटा भाई बहुत कम उम्र के थे हमें अपने घर का पता भी नहीं मालूम था। अब हम घर भी नहीं जा सकते थे।

एक दिन हमें एक व्यक्ति मिला। उसने हमसे हमारे घर का पता पूछा। हमने उसको बताया कि हमारे पिताजी विकलांग हैं और उनकी एक दुकान है। इसके आगे हमें भी कुछ नहीं मालूम था। उसने कहा, ''चलो, हमारे साथ हम तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ देंगे।'' हम दोनों भाई रेल में उसके साथ बैठकर आ गये। रास्ते में इटारसी स्टेशन पड़ता है। वो आदमी कहने लगा कि मै तुम दोनों के लिये कुछ खाने को लाता हूं और वो स्टेशन पर उतर गया। उस आदमी की बातचीत से हमें

बहुत डर लगा और हम स्टेशन पर उतर कर भाग गये। स्टेशन पर हमने एक सप्ताह बिताया। वहां पर हम इधर-उधर घूमते रहे।

यहां पर हमारी दोस्ती राजा नाम के एक लड़के से हुई। वो हमारी बहुत अच्छे से देखभाल करता था। एक दिन उसने हमें सिस्टर क्लारा से मिलवाया। सिस्टर ने हमारे बारे में पूछा। हमने उन्हें सबकुछ बता दिया। हमारी बात सुनकर सिस्टर ने हमें जीवोदय में ले आयीं। जीवोदय में हमें रहने की जगह मिली, हमें स्कूल में दाखिला दिला दिया गया। अब हम स्कूल भी जाने लगे। इस साल मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता हूं।

अब मैं चाहता हूं कि मैं भी अपने पिताजी और सिस्टर का सपना पूरा करूं। और अपने देश का नाम रोशन करूं।

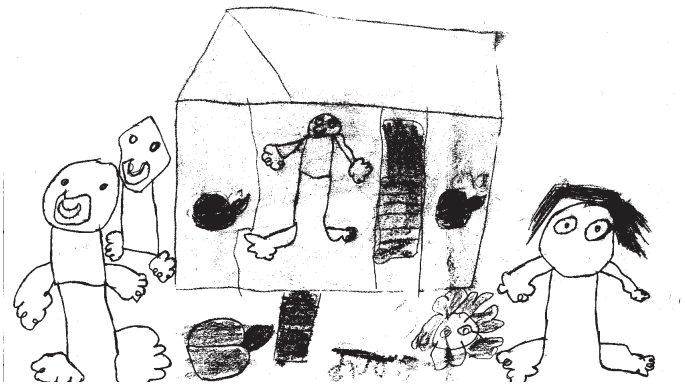

*राजित (कक्षा-दसवीं)*
*जीवोदय, इटारसी*

# पिछले दिनों में

पिछले दिनों जीवोदय में दो महत्वपूर्ण घटनायें हुईं। एक-जीवोदय के बच्चों के लिये एक और नया घर बना है। अब यहां के सारे लड़के नये घर में रहने के लिये जायेंगे। कुछ दिनों पहले बड़े ही रंगारंग समारोह में इस घर का उद्घाटन हुआ, इसमें बहुत सारे लोग आये थे। सारे बच्चों ने मिलकर नाटक, गीत और नृत्य की प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में होशंगाबाद की एस.पी. श्रीमती दीपिका सूरी, इटारसी के एस.डी.एम. श्री सत्येन्द्र अग्रवाल,सीनियर डी.ई. श्री मुकेश तथा जिले के कई गणमान्य नागरिक एवं शहर के बहुत सारे लोग शामिल थे उन्होंने नये घर के लिये जीवोदय के साथियों को बधाई दी।

इसके अलावा हम सबने मिलकर दीवाली मनायी। दीवाली में हमने क्या-क्या किया उसके बारे में अंदर के पन्नों पर पढ़ने को मिलेगा। दीवाली मनाने के लिये बहुत सारे लोगों ने हमें मदद की थी। इटारसी शहर के कुछ लोग भी हमारे साथ दीवाली मनाने आये थे। दीवाली में हमने खूब मस्ती की।

अक्टूबर में हमने एक पिकनिक भी की थी। हम सबलोग मिलकर भोपाल गये थे। वहां पर हमने राजनल साइंस सेन्टर देखा। इस सेन्टर में हमें विज्ञान की बहुत सी बातें जानने को मिलीं। जैसे गुरुत्वाकर्षण, नजरों को धोखा, आदि देखे। मगर हमें यहां पर सबसे मजेदार चीज लगी वो थी तारामंडल। यहां ये बात समझ

में आयी कि कौन सा तारा कहां होता है, ग्रह और तारे में क्या अंतर है, तारों के नाम कैसे पड़े आदि।

और हां, इसी महीने में हमने इटारसी में मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस के कार्यक्रम में भागीदारी की। हम बच्चों ने उसमें नाटक किया, खेलकूद प्रतियोगिता और बहुत सारे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लिया।

अब हम आने वाले महीनों में नये साल की तैयारियों, कैलेंडर की छपाई, बच्चों एवं कार्यकर्ताओं को एक्सपोजर विजिट की तैयारी में व्यस्त है। जिसके बारे में आपको अगले अंक में पढ़ने को मिलेगा।

## कैसी रही.....

एक बार हाथियों और चूहों में दुश्मनी हो गयी। एक दिन हाथी को आते देख सभी चूहे बिल में घुस गये। परन्तु एक छोटा चूहा अपना पैर बिल से बाहर निकालकर खड़ा हो गया।

उसके साथी चूहों ने उससे पूछा, ''अरे यार, ये क्या कर रहा है?''

छोटा चूहा बोला, ''आज हाथी को आने तो दो। फिर देखना मैं कैसे उन्हें टंगड़ी मारकर गिराता हूं।''

# क्या ये सच है!

**हलचल के पिछले अंक में छपी मुन्ना की कहानी तुम्हें याद है? कहानी में एक व्यक्ति मुन्ना को एक ऐसे कानून के बारे में जानकारी देता है। वो बताता है कि ये कानून किशोर लड़के-लड़कियों की सुरक्षा के बारे में है।**

**इस बार इसी कहानी का आगे का भाग छाप रहे हैं। तो चलो पढ़ते हैं, आगे की कहानी-**

अगले दिन मुन्ना को वो व्यक्ति फिर से मिला। ''और मुन्ना कैंसे हो?''उस व्यक्ति ने पूछा। मुन्ना ने कहा, ''मैं ठीक हूं। आप कैसे हैं? आपने अभी तक अपना नाम नहीं बताया। क्या नाम है आपका?'' ''मेरा नाम, मेरा नाम है, राजेन्द्र।'' उसने कहा। मुन्ना ने कहा, ''आज आप मुझे इस कानून के बारे में कुछ और बातें बताने वाले थे।'' ''हां, हां मुझे याद है। इसीलिए मैं आज यहां आया हूं।'' राजेन्द्र ने कहा। ''अच्छा भैया, आपने पिछली बार बताया था कि इस कानून से सिर्फ मेरे जैसे भीख मांगने वाले बच्चो को ही लाभ होगा। तो क्या दूसरे बच्चों के लिए यह कानून नहीं है?'' मुन्ना से सवाल किया। राजेन्द्र ने बताया, ''नहीं-नहीं, ऐसा नहीं है। ये कानून उन सभी किशोर-किशोरियों के लिये है जो अलग-अलग कारणों से

परेशान हैं। चाहे वो घर में काम करने वाले हों, जिनका लालन-पालन ठीक से नहीं हो रहा हो, या जिन्हें शारीरिक या मानसिक रुप से परेशान किया जाता है। और हां, कानून विकालांग बच्चे की भी बच्चों के साथ होने वाले शोषण के विरूद्ध सहायता करता है।'' मुन्ना ने सवाल किया, ''क्या ये कानून उन बच्चों की भी मदद करता है जो किसी प्राकृतिक आपदा के शिकार है? या और भी कारणों से प्रताड़ित हैं?'' राजेन्द्र ने कहा, '' हां-हां, जो किशोर-किशोरी किसी प्राकृतिक आपदा के शिकार हुए हों, (जैसे भूकम्प, बाढ़, आदि।) इंसान द्वारा बनायी गयी आपदा, (युद्ध, दंगा-फसाद आदि।) और वे किशोर-किशोरी जो कानून की उलझन में फंस गये हों वे भी इस कानून से सहायता ले सकते हैं।'' मुन्ना ने पूछा, ''आपने अभी बताया कि ये कानून किशोर-किशोरियों के लिये बना है। इसका क्या मतलब है?'' मुन्ना ये उम्र का एक दौर होता है। जो हर व्यक्ति की जिंदगी में आता है। हर लड़का और लड़की जिसकी उम्र 18 साल तक की हो उसे किशोर-किशोरी कहते हैं, लड़को को किशोर और लड़कियों को किशोरी कहते हैं।'' राजेन्द्र ने मुन्ना को समझाते हुए कहा। ''मगर भैया, इस कानून का फायदा सिर्फ इसी उम्र के लोगों को ही क्यों होता है?'' राजेन्द्र में अपनी बात को विस्तार देते हुए कहा, ''तुमने देखा होगा कि हमारे परिवार और समाज में इस उम्र के लड़के-लड़कियों को न तो बच्चा माना जाता है और न ही बड़ा। ऐसा माना जाता है कि 18 साल की उम्र तक बच्चे में समझ आ जाती है वो अपना भला-बुरा सब समझने लगता है। शायद सरकार ने इसीलिए वोट देने की उम्र 18 साल रखी है। इस बात को और

भी उदाहरणों से समझ सकते हैं।'' मुन्ना ने कहा ''अब मैं बात को कुछ-कुछ समझ पा रहा हूं। लेकिन मुझे एक बात समझ में नहीं आ रही है कि मान लो, मेरे साथ ऐसी कोई घटना हो जाती है तो मैं कानूनी सहायता के लिये कहां जाऊंगा?'' राजेन्द्र ने उसे आगे बताया, ''इस अधिनियम में बाल-अपराधियों के हितों की रक्षा के लिये एक **किशोर न्याय बोर्ड** हर जिला या जिलों के समूह स्तर पर स्थापित किये जाने का प्रावधान है। '' मुन्ना ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए सवाल किया, ''इस बोर्ड में कौन-कौन सदस्य होते हैं?'' ''किशोर न्याय बोर्ड में मुख्य रुप से एक कार्यपालिक मजिस्ट्रेट या न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी का तथा दो अन्य समाजसेवा के क्षेत्र में काम करनेवाले नागरिक, जिसमें कम से कम एक महिला का समाजसेवी का होना आवश्यक है। अच्छा मुन्ना, आज बहुत देर हो गयी है। अब मुझे जाना होगा। इसके आगे की बात हम कल करेंगे।'' अगले दिन आने का वादा करके राजेन्द्र अपने घर चला गया।

## आप आमंत्रित हैं-

**हलचल पत्रिका आपको कैसी लगी? पत्रिका को बेहतर बनाने के लिये आपके सुझाव और टिप्पणी की हम उम्मीद करते हैं।**

**और हां, अगर आप कहानी, कविता, चित्र, लेख आदि बनाते हैं तो हलचल के लिये जरूर ही भेंजें।**

## .....हमारे काम के बारे में

**स्पार्क :**

स्पार्क में ऐसे बच्चे शामिल हैं जिनके परिवार नहीं हैं या जिनके परिवारों से संपर्क नहीं हुआ है या जो घर नहीं जाना चाहते। ऐसे सारे बच्चों के लिये स्पार्क एक पुनर्वास स्थल है यहां बच्चे रहते हैं। उनकी रोज की जरुरतें पूरी की जाती हैं और उन्हें स्कूल भी भेजा जाता है।

**चिराग :**

जीवोदय की ये परियोजना किशोरियों के पुनर्वास के लिये एक आश्रय स्थल है। यहां रहने वाली लड़कियां विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ स्कूल भी जाती हैं। यहां पर लगभग 15–20 लड़कियां रहतीं हैं।

**जागृति :**

जबलपुर में स्थित जागृति परियोजना में आश्रय एवं पुनर्वास केन्द्र के माध्यम से लगभग 15–20 लड़के-लड़कियां रहते हैं। वे सब नियमित शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

आज वे बच्चे जो अपने जीवन से निराश हो चुके थे, हंसते-खिलखिलाते हुए बहुत सारी उम्मीदों के साथ दिखाई देते हैं।

हलचल पत्रिका भी इन बच्चों को अपनी बात रखने के लिये एक मंच का काम करेगी। साथ ही हमारे आपसे संवाद बनाने का माध्यम भी बनेगी।

इसी उम्मीद के साथ

**सिस्टर क्लारा**

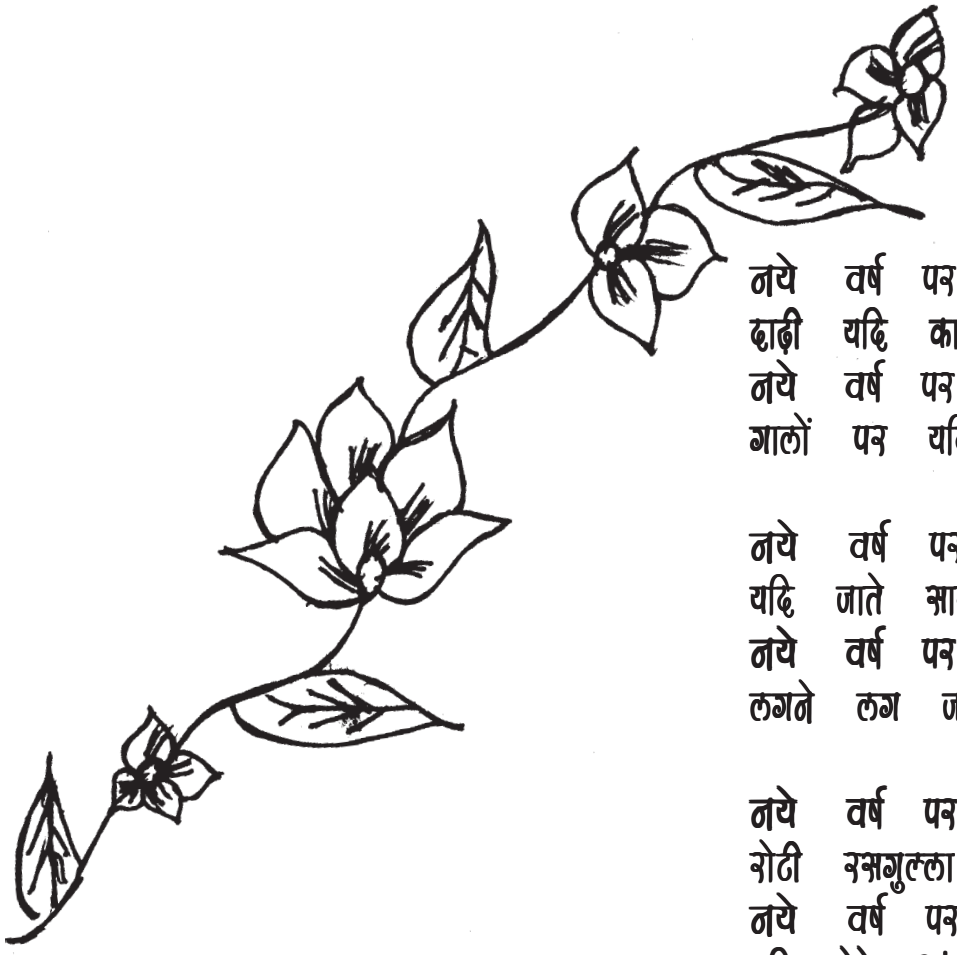

नये वर्ष पर दादा जी की
दाढ़ी यदि काली हो जाती
नये वर्ष पर नानी जी के
गालों पर यदि लाली आती।

नये वर्ष पर मम्मी-डैडी
यदि जाते सारा दुख भूल
नये वर्ष पर अगर चांद में
लगने लग जाता स्कूल।

नये वर्ष पर यदि यह रूनवी
मोटी रसगुल्ला हो जाती।
नये वर्ष पर कोयल आकर
यदि मेरे आंगन में गाती।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना